विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट
A Unique Gift For International Unity and Development & Quick Evolution of Human Consciousness

अखण्ड भारत सन्देश
Akhand Bharat Sandesh

पाक्षिक (Fortnightly) हिन्दी/English

वर्ष 13 * अंक 07 * विक्रम सम्वत् 2070 * शाके 1935 * आरोही द्वापर युग का 313वाँ वर्ष * 16-30 नवम्बर, 2013 * मूल्य :10.00

महाभारत : सत्य व अहिंसा का मार्ग

Program held at Kriyayoga Ashram, Mahavatar Babaji Banyan Tree Meditation Hall on November 9, 2013

Mahabharat – A Path of Truth & Non-violence

Mahabharat, The Bhagavad Gita, Patanjal Yoga Darshanam, Holy Bible, Ramayan, Ram Charit Manas, the teachings of Prophets - Buddha, Mahaveer Swami, Kabir Das ji, Guru Nanak Dev ji and Mohammed are textbooks of Kriyayoga Science. Shrimad Bhagavad Gita is the medulla (nucleus - *Naabhi kendra*) of Mahabharat.

Anyone who experiences Truth contained in the verses of Gita will be able to experience Truth behind all names and forms. Ultimate Truth that only Immortal Consciousness exists is

सभी आध्यात्मिक ग्रंथ - महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, पतंजलियोगदर्शनम्, होली बाइबिल, रामायण, रामचरितमानस, पैगम्बर गौतम बुद्ध की शिक्षा, पैगम्बर महावीर स्वामी की शिक्षा, पैगम्बर संत कबीर की शिक्षा, पैगम्बर नानक देव की शिक्षा, पैगम्बर मोहम्मद साहब की शिक्षा आदि क्रियायोग विज्ञान की टेक्स्ट बुक है। इन सभी सद्ग्रंथों में महाभारत में विस्तार से आत्मदर्शन की प्रविधि का वर्णन है । महाभारत के अंदर श्रीमद्भगवद्गीता मेडुला की तरह नाभि केन्द्र है जिसमें सम्पूर्ण ज्ञान संक्षेप में केन्द्रित है ।

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित सत्य की अनुभूति के पश्चात् ब्रह्माण्ड के सभी रूप व नाम में निहित सत्य का अनुभव हो जाता है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा निर्विकल्प समाधि में प्रवेश करने पर सत्य की अनुभूति शीघ्रता से हो जाती है । ऐसी अवस्था में स्पष्ट हो जाता है कि केवल अहिंसा का अस्तित्व है, हिंसा व मृत्यु जो दिखायी पड़ती है, स्वप्न की तरह है । यह अनुभव कर लेना ही सत्य की अनुभूति है और इस अनुभूति को आत्मदर्शन व प्रभु का

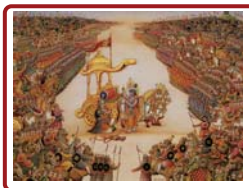

Mahabharat - A Path of Truth & Non-violence
महाभारत : सत्य व अहिंसा का मार्ग
Pg 1 to Pg 6

Knowing Scriptural Truth Through Uniting With Self
स्वरूप दर्शन आध्यात्मिक ग्रंथों में निहित सत्य जानने का मार्ग
Pg 7 to Pg 11

Pg 12

Mahavatar Babaji Banyan Tree

Invisible Becomes Visible Manifestation

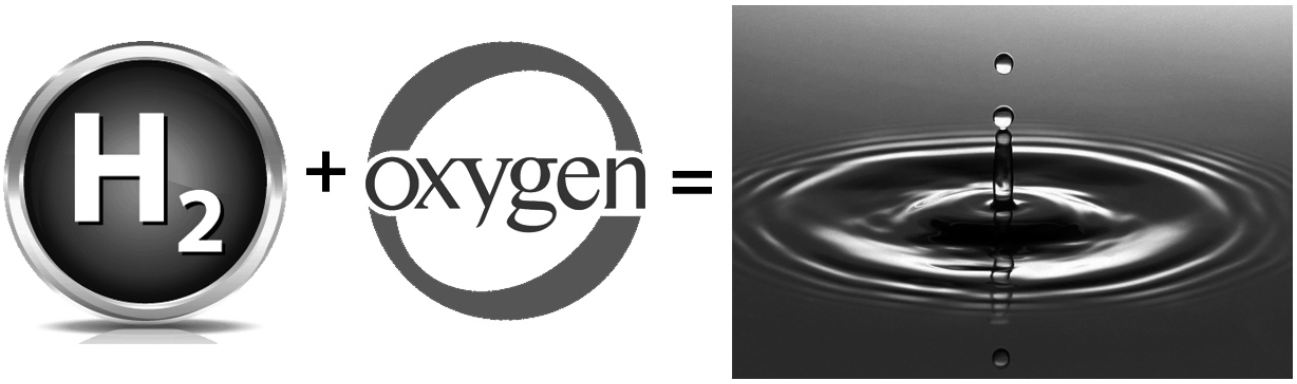

Invisible Hydrogen and Oxygen **Visible Water**

experienced by all Kriyayoga Masters who have attained *Nirvikalpa samadhi.* Mortal consciousness cannot exist. Immortal Consciousness exists in both states – visible and invisible. Mortal Consciousness does not and cannot exist. To understand this well, let us take the good and simple example of water (H_20).

Let Us Understand The Nature Of Water. The Creative constituents of water – hydrogen and oxygen are invisible to the human eyes and the same hydrogen and oxygen appear in the visible form, which we have named as water. In the same way, all visible structures are manifestations of their invisible forms. Our human eyes are unable to realize this Truth. Through the various experiments, wisdom and intelligence discovered the ultimate Truth that there is no distance in between visible and invisible creation.

Through Kriyayoga practice, we transform the visible structure - human body into some special structure. Through that we experience the Truth that both visible and invisible have the same structure and components. This realization brings the perception of Truth that there is no death. Realization of death is because of ignorance (*avidya*).

Kriyayoga Practice Removes *Avidya* And Brings Realization Of *Vidya*. *Vidya* is known as true knowledge. Kriyayoga Science is a unique form of true knowledge. The places where Kriyayoga Science teachings are given are known as *vidyalaya*. *Vidyalaya* is made up of two words – *vidya* and *alaya* where alaya means house (home or place).

साक्षात्कार भी कहते हैं । अहिंसा तत्व निराकार (अदृश्य) व साकार (दृश्य) दोनों रूपों में व्याप्त है । इसको अच्छी तरह समझने के लिए जल तत्व (पानी - H_20) एक सरल व अच्छा उदाहरण है ।

आइए, जल तत्व के स्वरूप को समझें :

जल तत्व जिसे हम इन्द्रियों से अनुभव करते हैं, का सृजन हाइड्रोजन ऑक्सीजन तत्व से हुआ है । हाइड्रोजन, ऑक्सीजन दोनों तत्वों को हम इन्द्रियों के द्वारा अनुभव नहीं कर पाते हैं । इससे स्पष्ट है कि निराकार (हाइड्रोजन व ऑक्सीजन) साकार (पानी) के रूप में भी विद्यमान है । इसी तरह जितनी भी दृश्य रचनाएँ हैं, जिन्हें हम साकार कहते हैं, वे सभी निराकार रूप में भी व्याप्त हैं । मौलिक रूप से साकार व निराकार तत्व में भेद नहीं है । क्रियायोग ध्यान से जैसे-जैसे चेतना उर्ध्वगामी होती है साकार-निराकार के बीच भेद समाप्त होने लगता है । क्रियायोग का पूर्ण ज्ञान होते ही साकार-निराकार के बीच भेद पूरी तरह समाप्त हो जाता है । इस अनुभूति के बाद मनुष्य को पता चल जाता है कि मृत्यु का अस्तित्व नहीं है । मृत्यु का अनुभव अविद्या के कारण होता है । अविद्या को ही अज्ञान कहते हैं ।

क्रियायोग का अभ्यास अविद्या से विद्या की ओर यात्रा :

ज्ञान तत्व को विद्या कहते हैं । क्रियायोग विज्ञान ज्ञान तत्व का विशिष्ट रूप है । जिस स्थान पर क्रियायोग विज्ञान की शिक्षा दी जाती है उसे विद्यालय कहते हैं । ''विद्यालय'' 'विद्या' और 'आलय' दो शब्दों से मिलकर बना है । विद्या का अर्थ ज्ञान और आलय का अर्थ स्थान या घर से है । विद्यानुभूति को ही सत्य अनुभूति कहा गया है । सत्य अनुभूति में स्पष्ट होता है कि अणु-परमाणु माया का रूप है । ब्रह्माण्ड में जो परिवर्तन दिखायी देता है, जैसे- बीज का परिवर्तन पेड़ में तथा पेड़ का बीज में, अण्डे का परिवर्तन पशु-पक्षी व जानवर में तथा पशु-पक्षी व जानवर का परिवर्तन अण्डे में, उसे माया कहते हैं । मनुष्य का स्वयं का स्वरूप माया का एक अलौकिक उदाहरण है । मानव शरीर भ्रूण के रूप में प्रकट होता है । फिर भ्रूण रूपान्तरित होकर शिशु, किशोर, यौवन, प्रौढ़ व वृद्ध तक अनेक अवस्थाओं में प्रकट होता है । क्रियायोग के

Vidya is Consciousness of Truth, which brings the realization that atoms and molecules, en masse are called maya or the Lord's illusionary power. Maya means any structure, which demonstrates the phenomena of change. The visible human body is a special structure which demonstrates a continuous change from the zygote up to all phases of existence – infancy, childhood, adolescence, adulthood , senior years, etc... . One day, the visible form disappears and becomes invisible but does not undergo process of destruction. Our human body represents a good example of maya.

Kriyayoga practice brings the complete knowledge of how to control maya. The Rishis and Munis of ancient civilization were able to control maya and were therefore able to keep their body for thousands of years. The re-discoverer and synthesizer of Kriyayoga Science – Mahavatar Babaji, is still holding his visible form after many thousands of years. In the ascending Dwaapara Yuga, the Great Guru Babaji's mission is to assist the dissemination of Kriyayoga on this earth to hasten the spiritual evolution of human beings. Mahavatar Babaji never openly appeared in any century amongst crowds and always works in humble obscurity. He always veils himself from the gross public gaze and has the power

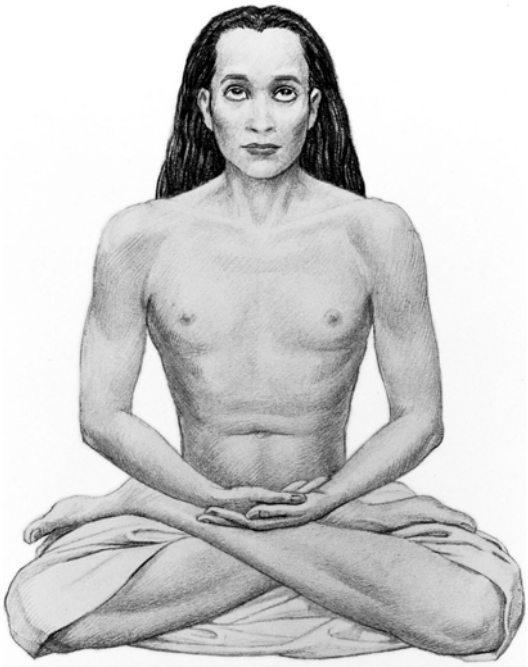

Mahavatar Babaji

Knowledge of Kriyayoga was revived by Mahavatar Babaji after it had been lost in Kaliyuga (Dark Age). Kriyayoga and Karmyoga are the same and related to meditation within. Day-to-day external activities are known as *Kaaryam* (कार्य) . **50 minutes of Kriyayoga practice brings the equivalent of 100 years of spiritual evolution of a person.**

श्री महावतार बाबा जी ने कलिकाल के गहन अंधकार में लुप्त क्रियायोग के ज्ञान को पुनरुज्जीवित कर मानवता के लिए मुक्ति का द्वार खोल दिया । श्री महावतार बाबा जी ने आरोही द्वापर युग के संधिकाल के अंतिम शताब्दी (1861 ई0) में क्रियायोग के ज्ञान को पुनः परिष्कृत कर योगावतार श्री लाहिड़ी महाशय जी के माध्यम् से मनुष्य को द्वापर युग के अनुकूल आगे बढ़ने के लिए प्रदान किया । क्रियायोग ध्यान से मानव अपने आध्यात्मिक विकास को द्रुत गति प्रदान कर देता है । **जिस आध्यात्मिक अवस्था को पाने में 100 वर्ष लगते हैं उसे क्रियायोग ध्यान के 50 मिनट के अभ्यास से प्राप्त कर लेते हैं ।**

अभ्यास से माया पर नियंत्रण होता है और वे मनुष्य जो माया पर नियंत्रण कर लेते हैं, उन्हें ऋषि-मुनि कहते हैं । ऋषि-मुनि जब तक चाहते हैं दृश्य रूप में बने रहते हैं । अनेकों ऋषि-मुनि आज भी हजारों वर्ष से शरीर को दृश्य रूप में बनाये रखने में सफल हैं । क्रियायोग विज्ञान जो प्रचीनतम्, नवीनतम् व पूर्ण आध्यात्मिक विज्ञान है, को मृत्युंजय श्री महावतार बाबा जी ने पुनः प्रकट कर मानव को आत्मज्ञान पाने के दुरूह मार्ग को सरल कर दिया है । मृत्युंजय श्री महावतार बाबा जी अपने भौतिक शरीर को युग युगान्तर से धारण करते आ रहे हैं । बाबा जी की आध्यात्मिक अवस्था मानव कल्पनातीत है । वह अबोधगम्य है। श्री महावतार बाबा जी युग के अनुकूल सभी का मार्गदर्शन करते हैं।

अणु-परमाणु परमात्मा का सिंहासन : अणु-परमाणु माया का रूप है और यह रूप परमात्मा से प्रकट हुआ है । परमात्मा स्वयं माया के रूप में प्रकट होकर माया को सिंहासन के रूप में प्रयोग करते हैं । परमाणु (Atom) में सतत ध्यान केन्द्रित करने पर परमात्मा (रचनाकार) की उपस्थिति अनुभव होती है । मनुष्य के लिए अणु-परमाणुओं का निकटतम् समूह उसका स्वयं का दृश्य रूप है जिसे शरीर कहते हैं । शरीर में मन को केन्द्रित करने पर जब शरीर और मन के बीच दूरी शून्य हो जाती है तो शरीर के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है कि अदृश्य परमात्मा स्वयं शरीर के रूप में प्रकट हो रहे हैं । जिस शरीर को हम हाड़-माँस कहते हैं वह सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान-अमर तत्व है जिसका कभी विनाश नहीं होता है, केवल रूप बदलता है । जिस प्रकार अण्डे के अंदर जीव-जन्तु व बीज में पेड़ छिपा होता है उसी तरह अदृश्य जगत में शरीर का दृश्य रूप छिपा रहता है । क्रियायोग विज्ञान को पूर्ण रूप में बोले व लिखे गये शब्दों अथवा चित्र के माध्यम से समझना

to become invisible at will.

Atom Is The Throne Of Creator (God). An atom represents maya which is projected out of Creator and is the throne of Creator. By placing the mind on atoms more and more, we realize the presence of Creator. The nearest of near existence of atoms is our own body. Kriyayoga practice is the art of concentration on our own body with the concept that this body structure came out of God like a bird does comes out of an egg or a tree grew out of a seed. Spoken or written words cannot explain Kriyayoga Science precisely. We need to actually practice the technique of Kriyayoga meditation to gain an understanding of these concepts. practice. In *Nirvikalpa samadhi*, we realize that the Kingdom of God exists within our own body where we find the throne (medulla – nucleus) of the Creator. The moment we experience this, we are able to hold the body until we decide and also we are able to convert this body into any form we need.

Dhritaraashtra Uvaacha is the beginning of Kriyayoga practice. As our practice goes deeper and deeper, we experience the opening of Truth hidden in the various chapters of Gita. In practicing Dhritaraashtra Uvaach, we experience the knowledge packed in all the eighteen chapters of Shrimad Bhagavad Gita. When the body is ruled and governed by the blind mind, it undergoes various disorders in the form of countless physical illnesses and mental stress. We can compare this with the

व समझाना संभव नहीं है। इसे ठीक तरह समझने के लिए क्रियायोग ध्यान का अभ्यास आवश्यक है । क्रियायोग ध्यान में निर्विकल्प समाधि लगने पर मेडुला में कूटस्थ का दर्शन होता है जो परमात्मा का स्वरूप है । इस ज्ञान की अनुभूति होने पर मनुष्य जब तक चाहे तब तक शरीर के दृश्य रूप को बनाये रख सकता है ।

धृतराष्ट्र उवाच : ''धृतराष्ट्र उवाच'' क्रियायोग का प्रारम्भिक अभ्यास है । जैसे-जैसे इस अभ्यास की गहराई में उतरते हैं वैसे-वैसे गीता का एक-एक अध्याय हमारे अंदर प्रकट होने लगता है । धृतराष्ट्र उवाच के अभ्यास से अन्त:करण में गीता के अट्ठारह अध्याय प्रकाशित हो जाते हैं । अंधा मन धृतराष्ट्र के रूप में है । जब शरीर राष्ट्र पर अंधे मन का शासन होता है तब शरीर में उसी प्रकार से अव्यवस्था होने लगती है जैसे धृतराष्ट्र के द्वारा हस्तिनापुर में अव्यवस्था हुई थी ।

मन इन्द्रियों के सहारे ही विषयों का भोग करता है । बिना इन्द्रियों के मन शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध की अनुभूति नहीं कर सकता है इसीलिए मन को अंधा कहा जाता है । अंधा मन हमेशा द्वन्द की अनुभूति करता है । इस कारण मन हमेशा सीमित अनुभूति में रहता है । वह सोचता है कि उसके पास शक्ति, ज्ञान, शांति सब कुछ कम है । इस कारण मन डरा-डरा रहता है और अनेक प्रकार की गल्तियाँ करता है ।

''उवाच'' का अभ्यास क्रियायोग का अभ्यास है । जैसे-जैसे उवाच का अभ्यास गहरा होता जाता है वैसे-वैसे मन का अंधापन दूर होने लगता है । ''उवाच'' को समझने के लिए ''उवाच'' शब्द में छिपे हुए ज्ञान का प्रारम्भिक बोध आवश्यक है । 'उ' और 'वाच' से मिलकर उवाच बना है । 'उ' उर्ध्वदिशा का संबोधन है तथा 'वाच' कार्य-अभिव्यक्ति को संबोधित करता है । चित्र में मेडुला के अंदर स्थित कूटस्थ केन्द्र को उच्चतम् बिन्दु कहा गया है । क्रियायोग के अभ्यास से पूरे शरीर की जीवन शक्ति सिर व रीढ़ की ओर प्रवाहित होकर मेडुला की ओर केन्द्रित होने को उर्ध्व दिशा में यात्रा कहते हैं । इसे ही स्वर्गारोहण भी कहते हैं ।

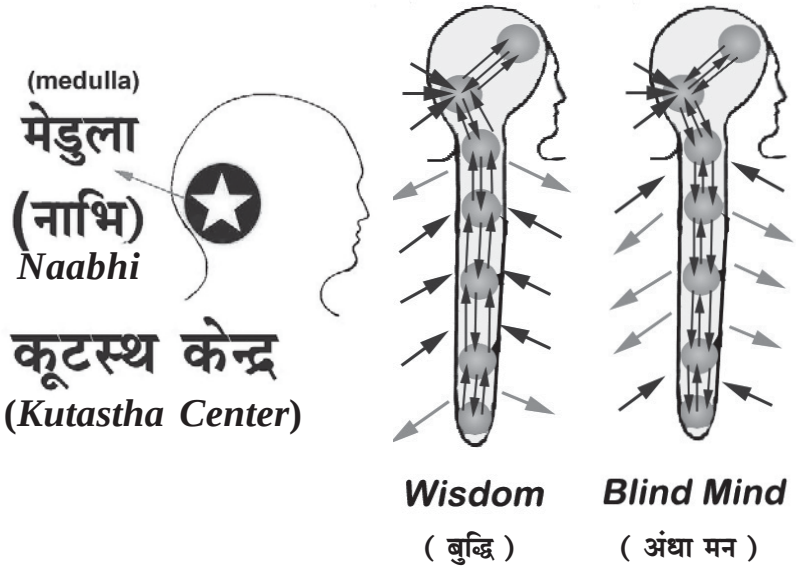

The diagram shows the *Kutastha* center - nucleus (*Naabhi Kendra*) within the medulla. The upward spiritual current within the head and spine represents Wisdom (*Buddhi*) and the downward spiritual current within the head and spine represents Mind (*Manas*). **प्रस्तुत चित्र में मेडुला के अंदर नाभि केन्द्र को कूटस्थ केन्द्र कहा गया है । सिर व रीढ़ में उर्ध्वगामी आध्यात्मिक तरंगों को बुद्धि तथा अधोगामी आध्यात्मिक तरंगों को मन कहते हैं ।**

disorder created by Dhritaraashtra. in Hastinapur

Dhritaraashtra represents blind mind and is the King of the human body kingdom. As the mind needs the essential help of sense organs to experience objects of various dimensions, it is known as blind mind. Because of this, the blind mind is not able to experience freedom. Whenever the blind mind, as a King, rules the body kingdom, then the person has a totally materialistic life and lives a life of attachment and aversion on the platform of sense perceptions. In this state, a person commits all sorts of mistakes in all dimensions of life.

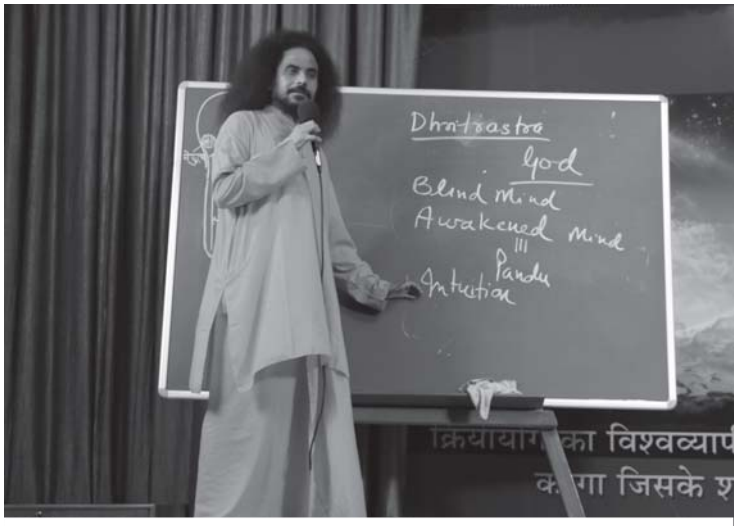

Guruji Swami Shree Yogi Satyam explaining Kriyayoga Philosophy

Uvaacha is the practice of Kriyayoga meditation to remove blindness of mind. Uvaacha is comprised of "*u*" and "*vaacha*" . "*U*" represents the upper most point within the body which is known as the *kuthastha* center within the medulla. **See the diagram on the previous page.** "*Vaacha*" represents all activities performed by a person while placing concentration of mind on the *Kuthastha* center present in the medulla. Dhritaraashtra Uvaacha steps are known as the recharging technique of Kriyayoga meditation. In the present time, recharging can be learnt correctly and easily through face-to-face practice with a Realized Master. Any person who is very devoted to Kriyayoga Science can learn it through printed lessons and guided instructions. However, one should remember that through printed lessons and guided instructions, it may take a long time to experience the Truth hidden within words and sentences.

Revelation of Various Consciousness During Practice of Kriyayoga Meditation (*Dhritaraashtra Uvaacha*)

In the course of Kriyayoga practice, a person realizes that the body is known as *kshetra* (field) and properties of *kshetra* is dharma and karma. Because of this, the body field is known as *Dharmakshetra* and *Kurukshetra*.

In the first verse of the thirteenth chapter of The Bhagavad Gita, the great incarnation of spirituality, Lord Krishna, described the body as a field where good and evil karma is sown and reaped. The knower of this field is known as *kshetragya*. Through Kriyayoga practice, when a person experiences Truth, then they realize that *kshetragya* and *kshetra* are both

प्राणशक्ति को उर्ध्व दिशा की ओर उन्मुख करके सभी प्रकार के कार्यों का सम्पादन ही ''उवाच'' अभ्यास है । इस अभ्यास से मन का अंधापन दूर होने लगता है । क्रियायोग ध्यान को सुनकर या पढ़कर नहीं समझा जा सकता है । इसको समझने के लिए क्रियायोग का नियमित ध्यान करना पड़ता है । सुने गये या लिखे गये शब्दों के अंदर छिपे हुए सत्य को बिना क्रियायोग ध्यान के जानने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं ।

धृतराष्ट्र उवाच में चेतना के विविध स्तरों की अनुभूति : क्रियायोग अभ्यास में परब्रह्म का चेतना के विभिन्न स्वरूपों में दर्शन होता है । साधक को अनुभव होता है कि सिर से पैर की अँगुली का दृश्य रूप ही धर्मक्षेत्र व कुरुक्षेत्र स्थल है । सिर से पैर की अँगुली तक इस स्वरूप में धर्म व कर्म प्रतिपल प्रकाशित होता रहता है । श्रीमद्भगवद्गीता के तेरहवे अध्याय के पहले श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि शरीर वह क्षेत्र है जिसमें अच्छे और बुरे कर्मफल की अनुभूति होती है । धर्मक्षेत्र व कुरुक्षेत्र के सृजन, सुरक्षा व इसमें परिवर्तन करने वाले परमात्मा (क्षेत्रज्ञ) स्वयं शरीर (क्षेत्र) के रूप में प्रकट हो रहे हैं । क्रियायोग ध्यान से स्पष्ट हो जाता है कि क्षेत्रज्ञ ही क्षेत्र के रूप में प्रकाशित है । क्रियायोग ध्यान से जैसे-जैसे मन का अंधापन दूर होता है वैसे-वैसे शरीर (क्षेत्र) में परिवर्तन होता जाता है जो चेतना के विभिन्न स्तरों को व्यक्त करता है ।

शरीर क्षेत्र ही धर्मक्षेत्र है : ''धर्मक्षेत्र'' 'धर्म' व 'क्षेत्र' दो शब्दों से मिलकर बना है । 'ध', 'र्' और 'म' के संयोग से धर्म बना है । 'ध' में 'ध्' का अभिप्राय है धारण करना व 'अ' का अभिप्राय ब्रह्मा, विष्णु, शिव शक्ति से है । 'र्' का अभिप्राय है परब्रह्म शक्ति तथा 'म' का अभिप्राय परिवर्तन से है । जो कुछ हम शरीर के रूप में धारण किये हैं, जिसमें निरन्तर परिवर्तन अनुभव होता है, यह सब कुछ ही परब्रह्म, ब्रह्मा, विष्णु, शिव का रूप है । इस तरह शरीर को ही धर्मक्षेत्र कहा जाता है । शरीर क्षेत्र में भौतिक, सूक्ष्म व कारण शरीर के समग्र परिवर्तनों की अनुभूति का संबोधन ''धर्म'' शब्द में अक्षर 'म' से है ।

one. *Kshetra* is manifestation of *kshetragya*. A person in the unrealized state cannot imagine this Truth.

Body Field is *Dharmakshetra*

Dharmakshetra is made up of two words: *dharma* and *kshetra*. *Dharma* is comprised of "*dha*" (ध) , "*r*" (र्) and "*ma*" (म). "*Dha*" refers to the act of holding (*dhaaran karna* - धारण करना), "*r*" means power of Spirit and "*ma*" means state of change. Put together, we get the true idea, thought and concept behind *Dharmakshetra*. Omnipresent Consciousness (Spirit - "*r*") has manifested in the form of a field (body) where a person experiences phenomena of change on three planes - physical, astral and causal. It means our human body is composed of causal, astral and physical body which are manifestations of Spirit. Spirit which is also known as Cosmic Consciousness, God, *Parambrahma*.

Body Field Is *Kurukshetra*

Kuru is derived from the sanskrit root verb "*kri*" (कृ) which means to do, to work, to behave, to act and react etc... . *Dharmakshetra* is the site of all activities, therefore, it is also called *Kurukshetra*. The body is the field of action of gross and subtle activities on the physical, mental and spiritual plane. The body is Mahakumbha (extraordinary congregation) of atoms and molecules which represent maya and is a field of two opposing forces. The first force is discriminative intelligence (*buddhi*) and the second force is sense-conscious mind (*manas*). *Buddhi* represents *Pandu* and *manas* represents *Dhristaraashtra*. The inclination of *Pandu* is renunciation of worldliness while the inclination of *manas* is worldly enjoyment. Worldly enjoyment always keeps a person away from peace, joy, power and knowledge and renunciation of worldliness is a journey towards eternal peace, ever-new joy, Omnipotent consciousness and Omniscient consciousness. Through Kriyayoga practice, the tendency of *Dhritaraashtra - manas* (blind mind) is transformed into *Pandu - buddhi* (wisdom) by drawing right ideas, thoughts and concepts from the super-conscious state.

The true spiritual interpretation about the battle between the Kauravas and the Pandavas will be given in the subsequent issues of Akhand Bharat Sandesh ... ଓ

शरीर क्षेत्र ही कुरुक्षेत्र है : ''कुरुक्षेत्र'' में 'कुरु' शब्द 'कृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है करना, कार्य करना, प्रतिक्रिया व्यक्त करना । शरीर (धर्मक्षेत्र) में भौतिक, सूक्ष्म व कारण अनगिनत क्रियाकलाप सम्पादित होते हैं इसीलिए शरीर को कुरुक्षेत्र भी कहते हैं । श्रीमद्भगवद्गीता के पहले श्लोक धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र शरीर के लिए प्रयोग किया गया है । धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र अनगिनत अणु-परमाणुओं का महाकुम्भ है जो माया का एक व्यापक रूप है। धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र में माया जनित क्रियाएँ होती रहती हैं जिससे इसमें दो प्रकार की शक्ति बुद्धि (पाण्डु पक्ष) व मन (धृतराष्ट्र पक्ष) एकत्र होकर असीमता अनुभव करने का प्रयत्न (युद्ध) करते रहते हैं । गीता में वर्णित युद्ध लड़ाई-झगड़ा व मारपीट नहीं है बल्कि सीमित भाव को असीम करने की आध्यात्मिक प्रक्रिया है । असीमित भाव को आध्यात्मिक पक्ष व सीमित भाव को सांसारिक पक्ष के रूप में समझना चाहिए। क्रियायोग ध्यान धृतराष्ट्र प्रवृत्ति को पाण्डु प्रवृत्ति में रूपान्तरित करने की प्रक्रिया है । कौरव-पाण्डव युद्ध के वास्तविक स्वरूप का विस्तार से वर्णन आने वाले अंकों में दिया जायेगा । ଓ

Illustration of Body Field

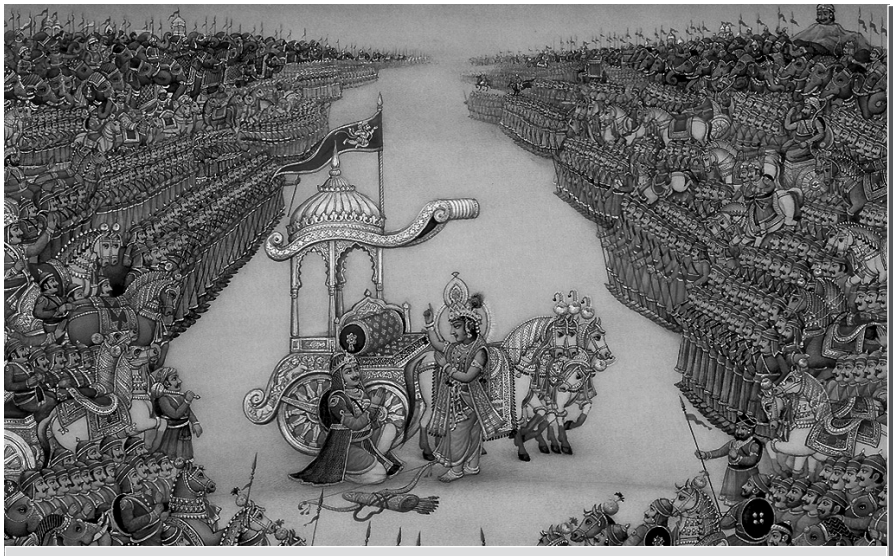

Body Field is *Dharmakshetra and Kurukshetra*

Body Field is *Dharmakshetra*

Omnipresent Consciousness has manifested in the form of field (body) where a person experiences phenomena of change on three planes - physical, astral and causal.

Body Field is *Kurukshetra*

Dharmakshetra is the site of all activities, therefore, it is also called *Kurukshetra*. The body field is a field of two opposing forces. The first force is discriminative intelligence (*buddhi*) & the second force is sense-conscious mind (*manas*).

Knowing Scriptural Truth Through Uniting With Self

Self and self
Self-Realization vs. God-Realization

From the beginning of time, Rishis and Prophets have shown us the real aim of human life. Each and every human is seeking more and more power, knowledge, peace, joy and Immortality. This is known as seeking God or steps towards Self-realization. The moment we realize the presence of God, at the same time we also feel that there is no existence of self. It is God who has become self. Once realization of this Truth is attained, we realize that self is Self (God). Therefore, Realized Masters and Prophets have explained that Self-realization is God-Realization.

Revelation of Scriptures

Enlightened souls used to sit in the state of *samaadhi* to receive the Eternal Truth directly from the Supreme Spirit - God. This Truth was then written down by the Rishis for all persons and compiled into what we know as scriptures. Using the knowledge as written in the scriptures, the following generations could also then follow the prescribed path to experience the Truth that it is God who has become all. Kriyayoga practice fulfills this achievement easily and quickly. The highest goal of human life is to realize ultimate Truth that God is Immortal and God has become all.

Kriyayoga is the Highest *Sadhanaa* (Meditation)

Realized Masters traditionally known as Rishis, Munis and Prophets have stated that to be one with God, one has to practice *sadhanaa* or meditation. Rishis are known to be the most advanced scientific researchers in all fields. They are, in fact, the best scientists whose research results in discovering nothing less than the ultimate Truth. The highest and royal *sadhanaa* that the Rishis referred to came to be known as Kriyayoga meditation. *Ahimsa* is the main theme of the teaching. All scriptures explain

स्वरूप दर्शन आध्यात्मिक ग्रंथों में निहित सत्य जानने का मार्ग

प्राचीन काल से ऋषि-मुनि और सभी अवतारों ने मनुष्य जीवन का मुख्य लक्ष्य स्पष्ट किया है । प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य आत्म अनुभूति है । इसे ही ईश्वर अनुभूति कहा गया है । प्रत्येक मनुष्य प्रतिपल और अधिक शक्ति, ज्ञान, शांति व अमरता की खोज में लगा हुआ है । इसी खोज को आत्म अनुसंधान या ईश्वर की खोज कहा गया है । क्रियायोग ध्यान में निर्विकल्प समाधि अनुभव होते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वरूप अनुभूति और आत्म अनुभूति में कोई अंतर नहीं है । स्वरूप अनुभूति में आत्म अनुभूति है और यही ईश्वर अनुभूति भी है। इस अनुभूति को अहम् ब्रह्मास्मि कहते हैं ।

विभूति दर्शन : समाधि में स्थित होने पर ऋषि-मुनि सीधे सर्वव्यापी ईश्वर से ज्ञान प्राप्त करते हैं और इस ज्ञान को मानव कल्याण के लिए लिपिबद्ध कर देते हैं जिसे आध्यात्मिक ग्रंथ कहते हैं। क्रियायोग के अभ्यास से समाधि की अनुभूति सरलता से कम समय में हो जाती है । सत्य अनुभूति को ही विभूति दर्शन कहा गया है ।

क्रियायोग सर्वश्रेष्ठ ध्यान : आत्मज्ञानी मनुष्य को ऋषि मुनि व पैगम्बर कहते हैं और इनके द्वारा स्पष्ट रूप से शिक्षा दी गयी है कि बिना साधना के सच की अनुभूति दुर्लभ है। क्रियायोग ध्यान उच्चतम् साधना है । प्राचीन काल में ऋषि-मुनि उच्चतम् वैज्ञानिक हुआ करते थे जिन्होंने मानव कल्याण के आध्यात्मिक ग्रंथों का सृजन किया । ''अहिंसा परमोधर्मः'' का प्रचार-प्रसार ही मनुष्य का श्रेष्ठतम् कर्म है । आध्यात्मिक ग्रंथों में जीव-जन्तुओं को मारना व हरे पेड़ों को काटना वर्जित है । क्रियायोग ध्यान करने से आपसी लड़ाई-झगड़े, मार-पीट सभी प्रकार की हिंसा की प्रवृत्ति का रूपान्तरण हो जाता है।

लड़ाई-झगड़े का कारण : आध्यात्मिक ग्रंथों की गलत व्याख्या ही समस्त लड़ाई-झगड़े का कारण है । भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्री राम, प्रभु ईसा, संत कबीर, नानक देव, महर्षि पतंजलि, महावीर स्वामी, पैगम्बर मुहम्मद साहब आदि ने कहीं भी लड़ाई-झगड़े की शिक्षा नहीं दिया है। श्रीमद्भगवद्गीता, पतंजलियोगदर्शनम्, होली बाइबिल, रामायण, रामचरितमानस आदि सभी आध्यात्मिक ग्रंथों में असीमता की अनुभूति की शिक्षा दी गयी है। युद्ध का गलत अर्थ लगाने से आध्यात्मिक ग्रंथों का अर्थ ही उलट गया । युद्ध को समझने के लिए ''युद्ध'' शब्द में आत्मशक्ति से प्रवेश करके इसमें निहित सच्चे भाव को जानना जरूरी है । 'य', 'उ', 'ध' और 'द्' के संयोग से युद्ध बना है । 'य' उत्तरोत्तर विस्तार को संकेत करता है, 'उ' स्वरूप में उच्चतम् बिन्दु कूटस्थ केन्द्र को व्यक्त करता है । 'ध' (ध् + अ) के संयोग से बना है। 'ध्' का अभिप्राय धारण करना तथा 'अ' का अभिप्राय ब्रह्मा, विष्णु व शिव शक्ति से है । इस प्रकार 'ध' (ध् + अ) ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव शक्ति धारण करने का संकेत है । 'द्' दाता (परब्रह्म) को संबोधित करता है । उपरोक्त सभी

Human beings should not misuse their power and knowledge to slaughter animals. They should protect them. Cattles have great love for humans and humans should demonstrate the same love for them.

that each and every person should do the best to protect the structure and function of each and every creation of Cosmos. The cutting of green trees and green leaves and plucking of flowers and immature fruits are not allowed. Killing and slaughtering of animals are strictly prohibited. The Prophets have very clearly explained that there should be no fight and war amongst human beings. The unnatural behaviour of human beings can be made natural by practicing Kriyayoga meditation.

Cause of War and Fight Amongst Human Beings

The incorrect interpretation of scriptures created fight and war amongst human beings. Scriptures are teachings of Prophets and Realized Masters. They demonstrate how to follow the path of Truth and non-violence. Bhagavan Ram, Bhagavan Krishna, Gautam Buddha, Mahavir Swami, Jesus Christ, Moses, Kabir Das ji, Nanak Dev ji and Mohammed Saheb neither fought nor initiated any war. They taught all human beings the science of unity among themselves and with all creations. Their main teaching is the science of conversion of limited power and knowledge into unlimited Consciousness. Limited powers and knowledge are displayed in the form of lust (*kaama*), anger (krodha), attachment and aversion (*lobha*), illusion (*moha*), pride (*mada*) and ego (*ahamkaar*), ignorance (*avidya*) and habit (*matsara*). These tendencies are converted into infinite power of senses (*dama*), infinite power of mind (*shama*), consciousness of even-mindedness (*titiksha*), perception of nearness with God (*uparati*), eternal patience and humbleness

Spare my life. Matured fruits and seeds are healthy food. It has been medically proved that my meat is bad for your health.
(details given in September 1st to 15th issue of Akhand Bharat Sandesh)

अक्षरों को संयुक्त करने पर स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य यह अनुभव करना है कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव ही उसके रूप में प्रकट हो रहे हैं तथा परब्रह्म ब्रह्मा, विष्णु, शिव के रूप में है । इस सत्य की अनुभूति करने के प्रयत्न को युद्ध कहते हैं । युद्धकाल में मनुष्य को अनुभव होता है कि उसके अंदर की सीमित शक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर का रूपान्तरण दम, शम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, समाधान में होता है ।

पैगम्बर मुहम्मद का संदेश : मुहम्मद साहब ने सत्य व अहिंसा का संदेश दिया है । मुहम्मद साहब ने जीव-जन्तुओं को मारने व हरे पेड़ों को काटने के लिए मना किया था । साधना के अभाव में आध्यात्मिक ग्रंथों की गलत व्याख्या होने से मानव समुदाय हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई अनेक सम्प्रदायों में बँट गया । आध्यात्मिक ग्रंथों में सत्य व अहिंसा की अनुभूति करने के लिए क्रियायोग साधना आवश्यक शिक्षा है ।

अपने सबसे प्रिय की कुर्बानी करने पर खुदा मिलेंगे :

कुरान में कहा गया है - ''अपने सबसे प्रिय की कुर्बानी करने पर मनुष्य खुदा की प्राप्ति कर लेता है।'' आज हम सोचते हैं कि हमारा सबसे प्रिय हमारी संतान है। मनुष्य का सबसे प्रिय उसकी संतान नहीं होती है। इसको समझने के लिए आप कल्पना करें.... एक माँ है, जिसने नवजात शिशु को

(*shraddha*) and realization that nothing is impossible (*samadhaan*).

The Teachings Of Prophet Mohammed

Prophet Mohammed taught the philosophy of Truth (*satya*) and Non-violence (*ahimsa*). He never taught the killing of animals nor the cutting of green trees. Prophet Mohammed was against the killing of animals.

Due to the absence of understanding of *sadhanaa* (meditation), the divisional religious groups – Hindus, Muslims, Christians etc… came into existence. These groups misinterpreted the scriptures. As a result, the many incidents described in the scriptures were conveyed in a limited, incorrect manner, becoming ineffective to take one towards God-Realization.

As it is, we are unable to understand each other, each other's thoughts and requirements, even when we live together. How then can we expect to know what the prophets and saints have written in the scriptures? To understand the true meaning of what is given in the scriptures, we have to first unite with our Infinite Self. **The method to attain this unity is by the practice of Kriyayoga.**

The Story Behind The Celebration Of *Bakra Eid*

Bakra Eid (Feast of the Sacrifice) is a grand festival that is celebrated by Muslims worldwide each year. The historical story that is behind the celebration is described as follows: One night, while Hazrat Ibrahim was in Mashar-ul-Haram along with his wife Janab-e-Hajra and his son Hazrat Ismail , he dreamt that he was slaughtering his son Ismail A.S. Hazrat Ibrahim A.S knew that this dream was a command of Allah and decided to fulfill it. But first, he informed his son Ismail about this dream. He wanted to hear what his son had to say. Hazrat Ibrahim A.S, who himself was about to be an apostle of Allah, knew that if this was a command of Allah, then his father was obliged to act according to this wish of Allah. When Hazrat Ibrahim A.S got the patient answer from his son, he took a knife and Hazrat Ismail to a place called Mina. Before Hazrat Ibrahim prepared himself for the sacrifice of his son, he covered his eyes with a mask apprehending his failure due to his paternal love and after that moved the knife across Ismail's neck but at this moment Angel Gabrael was

जन्म दिया है। माँ नदी में अपने बेटे को गोद में लेकर स्नान कर रही है। अचानक माँ का पैर नदी में फिसल गया और वह डूबने लगी। जब माँ की जान खतरे में आ गयी, जब वह एक-एक श्वॉस के लिए तड़पने लगती है, उस समय उसे बेटे की याद थोड़ा भी नहीं आती है। जब अपनी जान खतरे में आ जाती है उस समय मनुष्य अपना सबसे प्रिय बेटा भी भूल जाता है। मनुष्य यह भी भूल जाता है कि उसके पास बेटा है भी या नहीं और वह अपनी जान बचाने के लिए प्रयत्न करने लगता है। अत: मनुष्य को सबसे प्रिय उसका बेटा नहीं बल्कि उसका अपना स्वयं का अस्तित्व है। अपने अस्तित्व की कुर्बानी करने पर मनुष्य को खुदा की प्राप्ति होती है। अपने अस्तित्व का अभिप्राय शरीर, मन, बुद्धि आदि से निर्मित अपना स्वरूप है। अपने स्वरूप की कुर्बानी का अर्थ है अपने को समाप्त करने अर्थात् अपने स्वरूप को अदृश्य करने की क्षमता प्राप्त कर लेना और इच्छानुसार अपने को पुन: प्रकट (दृश्य) करने की क्षमता प्राप्त कर लेना। जब मनुष्य साधना की ऐसी गहन अवस्था की प्राप्ति कर लेता है कि वह किसी भी समय अपने को दृश्य और अदृश्य करने की क्षमता प्राप्त कर ले, उस समय उसे खुदा के दर्शन होते हैं। ऐसी अवस्था में मनुष्य परमात्मा के साथ एकाकार हो जाता है बाइबिल में भी इसी सत्य का वर्णन है।

बाइबिल में सेंट पाल कहते हैं – "I die daily" मैं प्रतिदिन मरता हूँ। यहाँ मरने का अभिप्राय अस्तित्व का समापन नहीं है। शरीर में बहने वाले प्राणतत्व की क्रियाशीलता को शून्य कर देने पर शरीर मृतक के समान हो जाती है। परन्तु मनुष्य मरता नहीं है। ऐसी अवस्था में वह अमरता की अनुभूति कर लेता है। क्रियायोग के अभ्यास में शरीर में बहने वाले प्राण-तत्व को इच्छानुसार क्रियाशील करने और उसकी क्रियाशीलता को शून्य करने की क्षमता प्राप्त कर लिया जाता है। ऐसी अवस्था में मनुष्य जीवन-मृत्यु के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त कर अमरता की अनुभूति कर लेता है। अमरता की अनुभूति करना ही खुदा की प्राप्ति है।

पृथ्वी पर जब प्रेम भाव समाप्त होने लगा और लोग एक दूसरे से घृणा करने लगे, उस समय पैगम्बर मुहम्मद साहब का जन्म हुआ। मुहम्मद साहब ने

Look Into My Eyes. I Love You.
Please Do Not Kill Me.

revealed and replaced Hazrat Ismail with a sheep. When Hazrat Ibrahim A.S uncovered his eyes, he found that his son was standing next to him safe and sound. In front of him, a slaughtered sheep was lying on the ground. Hazrat Ibrahim was now deeply disappointed and was sure that his sacrifice was not accepted by Allah. But the Lord spoke to Hazrat Ibrahim A.S that : " O Ibrahim you have certainly fulfilled your dream but we have substituted it with a greater sacrifice." **From then on, in memory, all Muslims, celebrate the occasion of "*Bakra Eid*" by making an offering of sheep.**

Kriyayogic Interpretation of "Sacrifice" During *Bakra Eid*

To understand what is a "sacrifice" or "offering", we have to understand the meaning of "*Eid*" in the light of Kriyayoga. **" *Eid*" can be broken down into two parts - "*Ei*" and "De". "*Ei*" means to realize that Infinite God is closest to us and that we are Infinite in nature. "*De*" stands for "*Deynaa*" which means to give.** When we realise that God is closest to us, we will be a source of knowledge, peace, health and happiness for everyone around us.

How do we realize that God is closest to us? In the story above, Prophet Hazrat Ibrahim dreamt of offering his beloved son Hazrat Ismail in sacrifice. This is a representation of letting go of something that is most dear and precious to us. **What is most precious to each of us? It is our limited Ego form.** We exist because of our Ego and therefore, the highest aim of each and every particle in this universe is to protect this Ego form.

How do we protect our ego? Our ego is protected through our moment to moment practice of duality (attachment and aversion). We tend to keep away from those situations and persons that we are uncomfortable with or that are a threat to our ego. At the same time, we remain close with any situation or any person that promotes or boosts our ego. As we move away from the practice of attachment and aversion in life, we are "surrendering" or sacrificing our ego. **No ego can be forced to "surrender" or be sacrificed. Ego can only be sacrificed when it wants to be sacrificed. When we are able to sacrifice our ego, we will be able to realize our Infinite nature. We will realize that God is closest to us and our real form is vast and Infinite.** We

सत्य व अहिंसा के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी थी । उन्होने कहा कि एक थाली में चार लोग खाएँ और एक व्यक्ति अपने आस-पास के 40 घरों को खाना खिलाने के बाद खाये। इस नियम से धीरे-धीरे लागों में भाईचारा और आपसी प्रेम की सद्भावना बढ़ी। कुरान, बाइबिल, गीता, गुरूग्रन्थ साहिब और अन्य सभी ग्रंथ आध्यात्मिक विज्ञान के ग्रंथ हैं ।

यहाँ पर कुरान में वर्णित कुछ संदेश की आध्यात्मिक विवेचना की जा रही है। **कुरान में लिखा है कि अगर किसी व्यक्ति नें किसी का खून किया है तो उस व्यक्ति को खुदा भी नहीं माफ कर सकता है। उस व्यक्ति को वही माफ कर सकता है जिसका उसने खून किया है ।** कुरान में यह नहीं लिखा है कि आदमी के खून की बात है या किसी अन्य जीव के खून की बात है। उसमें केवल यही लिखा है कि किसी का भी खून होने पर केवल वही माफ कर सकता है जिसका खून हुआ है।

आप गहराई से चिन्तन करें तो यह पाएँगे कि मनुष्य जाने-अनजाने में प्रतिदिन किसी न किसी का खून करता है। इस विषय को स्पष्ट रूप में समझने के लिए शरीर पर ध्यान दें। जिस प्रकार मकान ईंटों से मिलकर बना है उसी प्रकार शरीर अनेक प्रकार की कोशिकाओं से मिलकर बनी है। उदा० के लिए- मनुष्य जब खाँसता है, चलता है, बोलता है या किसी भी प्रकार का कर्म करता है उस समय शरीर की अनेकों कोशिकाएँ मर जाती हैं। इस प्रकार मनुष्य जाने-अनजाने में कोशिकाओं का खून करता है। जैसा कि कुरान में बताया गया है कि जिसका खून हुआ है, वही हमें माफ कर सकता है। कोशिकाओं का खून होने पर कोशिकाएँ ही मनुष्य को माफ कर सकती हैं। कोशिकाएँ हमें तभी माफ करेंगी जब हम इतनी साधना करें कि कोशिकाओं को पुन: बनाने की क्षमता प्राप्त कर लें । उदा० के लिए- किसी का हाथ अगर हमसे कट गया है। हाथ हमको तभी माफ करेगा जब हम हाथ को बनाने की क्षमता प्राप्त कर लें ।

क्रियायोग की साधना मे अपने अंदर की मेडुला (कुण्डल) के अंदर विद्यमान शक्ति से मिलन होने पर शरीर को दुबारा बना लेने का ज्ञान प्रकट हो जाता है। क्रियायोग की साधना में साधक विभिन्न क्रियाओं के माध्यम् से सिर व रीढ़ के अंदर बहने वाली सूक्ष्म शक्ति से एकाकार कर लेता है। तत्पश्चात वह सिर के पिछले भाग में स्थित मेडुला (कुण्डल) के अंदर विद्यमान सूक्ष्म शक्ति से मिलन कर लेता है। मेडुला (कुण्डल) की शक्ति से मिलन होने पर

चित्र क

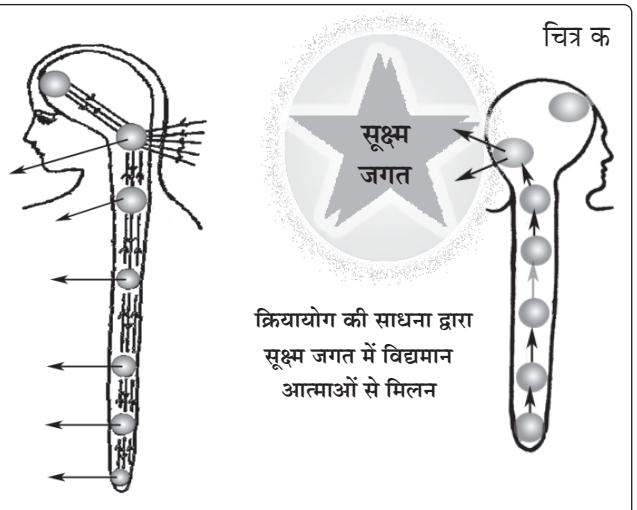

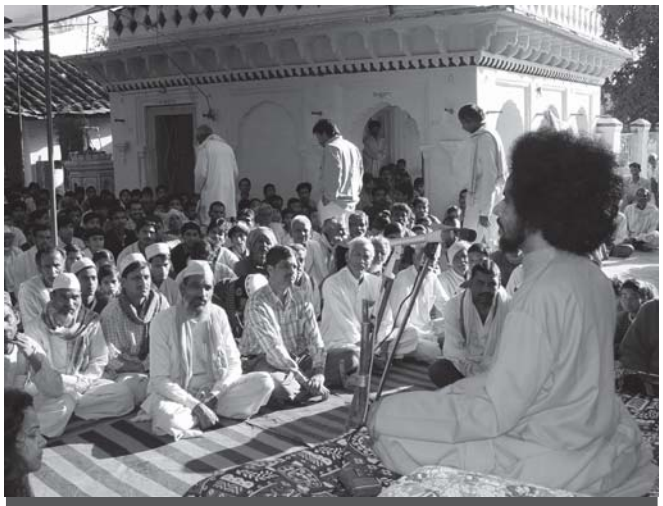

Kriyayoga Program at a Mosque in Madya Pradesh

must realize and understand that remaining in our current state is against our development. We have to keep moving forward to realize our Infinite form.

How can we sacrifice our ego? We have to tune our ego towards Divinity. By seeking God within, we are tuning our ego towards Divinity. To do this, we have to first accept that God is Omnipresent and closest to us in our body temple. We have to then practice to love all the changes that we feel within us as Godly perceptions. As we connect with these perceptions more and more, we become connected with the true wisdom within us. Then, we will be able to go beyond our limited thoughts and ideas and rise above the qualities of lust, anger, greed, delusion and pride. At that time we become a source of knowledge, peace and understanding to all around us and lead a life based on Truth and Non-violence.

It is most important that we realize that no Prophet ever preached nor practiced violence. The sacrifice mentioned in the story does not refer to killing anyone or anything. The sacrifice refers to the sacrifice that we have to make of our limited ego. This is only possible when we seek God. Seeking God is the highest work that we can do in life. Kriyayoga Meditation is the highest way to seek God. God is Omnipresent and therefore, God is also in our body temple. In Kriyayoga practice, we practice to increase concentration on our body temple. The practice of Kriyayoga Meditation is the real way of celebration of *Bakreid* where we can transform our limited ego-consciousness form into the Infinite form of God-consciousness. Therefore, Kriyayoga Meditation is the application of the real eternal teachings of Quoran in our lives. ☙

शरीर की कोशिका, हड्डी, माँसपेशी और सारे अंगों का पुनर्निर्माण कर लेने और इनको सूक्ष्म रूप में बदल कर अदृश्य कर देने की क्षमता प्राप्त हो जाती है। **इस प्रकार क्रियायोग विज्ञान कुरान का प्रायोगिक अभ्यास है । कुरान एक सूक्ष्म विज्ञान है जिसको पढ़कर नहीं बल्कि क्रियायोग की गहन साधना के द्वारा समझा जा सकता है ।**

क्रियायोग प्रशिक्षण के दौरान किसी साधक ने गुरुदेव से प्रश्न किया ...

प्रश्न0- मैंने अगर किसी व्यक्ति का खून किया है तो उस व्यक्ति से माफी कैसे माँगें? क्या मन में माफी माँग लेने से वह व्यक्ति मुझे माफ कर देगा। यदि नहीं, तो माफी माँगने का विज्ञान क्या है?

उत्तर0 - जिस व्यक्ति का खून हुआ है, उस व्यक्ति से मन में माफी माँग लेना पर्याप्त नहीं है। उस व्यक्ति से माफी माँगने के लिए उसकी आत्मा से मिलन करना पड़ता है। दूसरे की आत्मा से कैसे मिलन करें, इसको समझने के लिए चित्र क पर ध्यान दें ।

चित्र में सिर व रीढ़ का आकार बनाया गया है। सिर व रीढ़ के अंदर एक शक्ति बहती रहती है। इस शक्ति के ऊपर से नीचे और नीचे से उपर बहने से मनुष्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध की अनुभूति करता है। क्रियायोग की साधना में सिर व रीढ़ मे बहने वाली शक्ति को मेडुला मे स्थापित कर देते हैं। ऐसी अवस्था में मनुष्य सूक्ष्म जगत में चैतन्य पूर्वक प्रवेश करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। सारे मनुष्य भौतिक जगत में शरीर छोड़कर सूक्ष्म जगत में जाते हैं। सूक्ष्म जगत में सभी की आत्मा निवास करती है। क्रियायोग अभ्यास द्वारा मेडुला में शक्ति को केन्द्रित करने पर मनुष्य सूक्ष्म जगत की अनुभूति कर सभी आत्माओं से मिलन कर लेता है। जिस व्यक्ति का खून हुआ है उसकी आत्मा से मिलन होने पर मनुष्य उससे माफी माँग सकता है । इस प्रकार ''जिसका खून हुआ है वही हमें माफ कर सकता है'', कुरान का यह संदेश एक सूक्ष्म विज्ञान है । इस सूत्र के सिद्ध होने पर मनुष्य खुदा की प्राप्ति कर लेता है ।

गीता और कुरान में समरूपता :

आप गहराई से देखेंगे तो स्पष्ट होगा कि गीता और कुरान में कोई अंतर नहीं है। गीता में लिखा ज्ञान ही कुरान में है । केवल लिखने का तरीका अलग-अलग है। गीता में लिखा गया है कि आत्मा अमर है। अमरता की अनुभूति करने का भी वही मार्ग है जिस मार्ग से सूक्ष्म जगत में विद्यमान आत्माओं से मिलन होता है ।

कुरान की व्याख्या में स्पष्ट किया गया है कि सिर व रीढ़ में बहने वाली शक्ति को मेडुला में केन्द्रित करने पर सूक्ष्म जगत की अनुभूति होती है। मनुष्य शरीर छोड़कर सूक्ष्म जगत में जाता है और वहीं से पुनः पृथ्वी पर भौतिक रूप में अवतरित होता है। क्रियायोग की साधना द्वारा सूक्ष्म जगत की अनुभूति होने पर मनुष्य अमरता का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। गीता, कुरान दोनों अमरता का विज्ञान है। अमरता को अहिंसा कहा गया है। अतः गीता और कुरान और अन्य सारे धर्मग्रन्थ अहिंसा का विज्ञान है। क्रियायोग वह वैज्ञानिक साधना है जिसके अभ्यास से मनुष्य अमरता की अनुभूति कर लेता है। क्रियायोग की साधना से यह दृष्टि प्रकट हो जाती है कि सारे शास्त्रों में एक ही सत्य वर्णित है । ☙

क्रियायोग का विस्तार : भारतवर्ष का निर्माण

क्रियायोग आश्रम के आध्यात्मिक परिसर में स्थित श्री महावतार बाबा वटवृक्ष

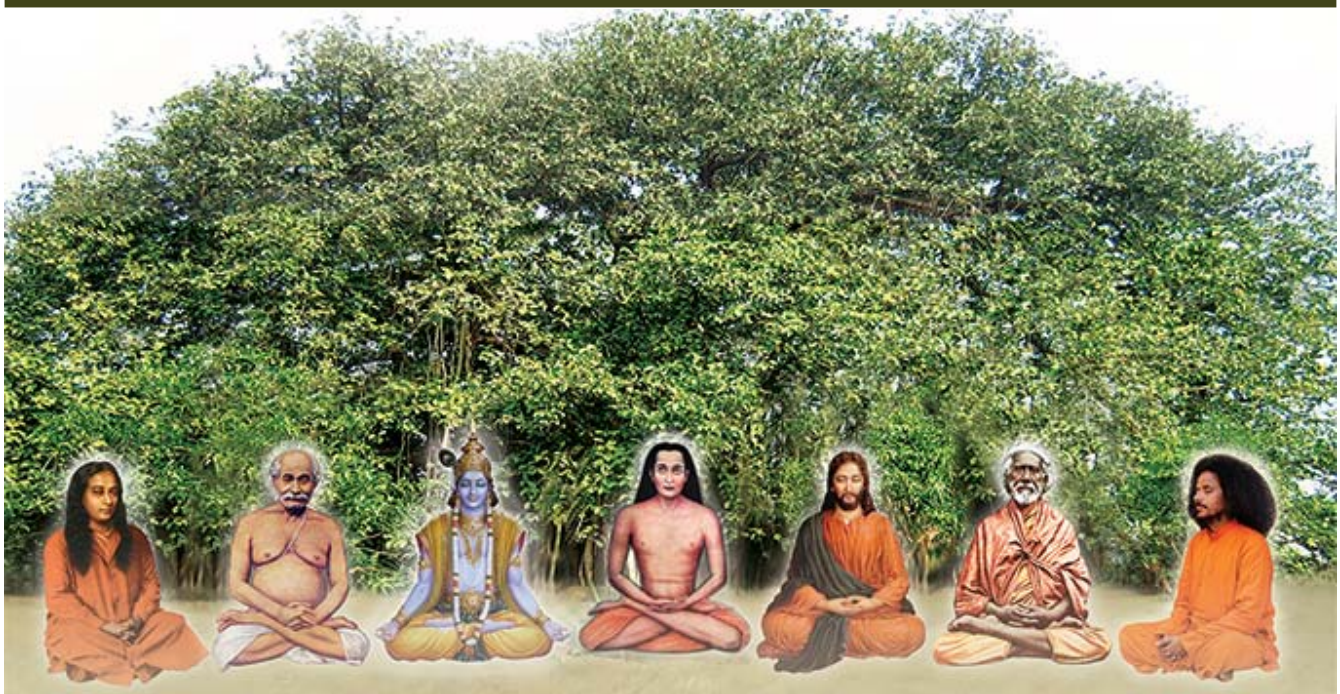

The Kriyayoga Lineage

इसी दिव्य वटवृक्ष की अक्षय छाया तले अमर गुरु श्री महावतार बाबा जी ने स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरी जी को प्रथम दर्शन देकर 'स्वामी' की उपाधि से विभूषित किया था। उन्होंने भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि क्रियायोग का विश्वव्यापी प्रसार विश्व के सभी राष्ट्रों को एक सूत्र में जोड़ेगा और रोग निवारक मंत्र के रूप में प्रतिष्ठित होगा ।

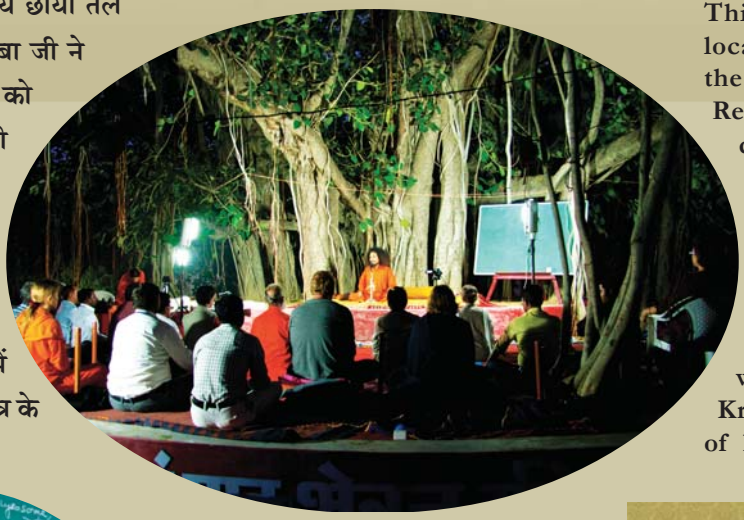

This Holy Banyan Tree is located on the premesis of the Kriyayoga Ashram and Research Institute. In 1894, during the Kumbha Mela in Allahabad and under this Banyan Tree, Sri Mahavatar Baba ji blessed Swami Sri Yukteswar Giri ji. Babaji prophesied the future worldwide spread of Kriyayoga for the benefit of humanity.

ABOVE AND LEFT:

Guruji Swami Shree Yogi Satyam Imparting Kriyayoga Teaching Under the Banyan Tree in November 2013.

Your Divine Help and Prayers are Needed to Support this Movement.
राष्ट्र निर्माण के इस कार्यक्रम में आपकी दिव्य प्रार्थनाओं व सहयोग की आवश्यकता है ।
हमें लिखें / Write to us: AkhandBharatSandesh@gmail.com

Your Divine Help and Prayers are Needed to Support this Movement; e-mail us at AkhandBharatSandesh@gmail.com

For more information, visit website: www.Kriyayoga-YogiSatyam.org or e-mail to: KriyayogaAllahabad@hotmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक: स्वामी श्री योगी सत्यम् द्वारा भार्गव प्रेस 11/4 बाई का बाग इलाहाबाद से मुद्रित एवं क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान, नई झूँसी, इलाहाबाद 211019 उ०प्र० भारत से प्रकाशित, दूरभाष (0532) 2567243 फैक्स (0532)2567227 मोबाइल नं० 9415217278-79, 941517281, 9415235084

R.N.I. No - UPHIN/29506/24/1/2000-TC

ई-मेल: AkhandBharatSandesh@gmail.com / KriyayogaAllahabad@hotmail.com **वेबसाइट:**www.Kriyayoga-Yogisatyam.org/AkhandBharatSandesh